तेरहवीं और चौदहवीं सदी में अर्थव्यवस्था

भारत प्राचीनकाल से अपनी अतुलित धन-सम्पदा के लिए विख्यात रहा है. इसी कारण सदैव विदेशियों की निगाहें इस देश पर गढ़ी रहीं और विदेशी आक्रमणकारी आते रहे और यहाँ की अकूत सम्पदा को लूटकर ले गए. मोहम्मद बिन कासिम और महमूद गजनवी ने भारत को जमकर लूटा. महमूद गजनवी ने उत्तरी भारत से असीमित धन सिक्कों, सोने, चाँदी, कीमती रत्नों और अनेक प्रकार के कीमती सामान के रूप में हासिल किया और गजनी ले गया. हालांकि तुर्क आक्रमणकारी भारत की सम्पदा को लूटकर ले जाते रहे, लेकिन वे न तो भारत को पूरी तरह धनहीन कर सके और न ही धन-उत्पादन के साधन को नष्ट कर सके. यह इसी से स्पष्ट है कि दिल्ली के सुल्तानों उत्तर और दक्षिण भारत से अत्यधिक धन-सम्पदा का दोहन किया और अत्यधिक विलासी जीवन व्यतीत किया और जब चौदहवीं सदी के अन्त में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया था तब वह देश के एक छोटेसे भू-भाग से लाखों की सम्पदा लूटकर ले गया था. इससे स्पष्ट है कि भारत में तेरहवीं एवं चौदहवीं सदी में सम्पन्नता की कोई कमी नहीं थी

भारत प्रारम्भ से ही कृषि प्रधान देश रहा है इसीलिए सदैव कृषि ही यहाँ की सम्पन्नता का प्रमुख आधार रही है. तेरहवीं एवं चौदहवीं सदी में भी कृषि ही सम्पन्नता का प्रमुख आधार थी. देश की अधिकांश भूमि उपजाऊ एवं कृषि योग्य थी एवं यहाँ का ऋतु परिवर्तन भी फसलों की पैदावार के अनूकूल था. वर्षा भी पर्याप्त मात्रा में होती थी. वैसे तो सिंचाई की सुविधाएँ प्राचीनकाल से ही विद्यमान थीं, लेकिन अनेक सुल्तानों ने कृषि की पैदावार बढ़ाने के लिए प्रयास किए. विशेष रूप से गियासुद्दीन तुगलक, मोहम्मद बिन तुगलक और फिरोजशाह तुगलक के प्रयास उल्लेखनीय रहे. गियासुद्दीन तुगलक ने कृषि पैदावार बढ़ाने के लिए नहरों का निर्माण करवाया. सुल्तान

Scanned with CamScanner

मोहम्मद बिन तुगलक ने एक नया विभाग दीवान-ए-अमीर को ही खोला और फिरोज तुगलक ने सिंचाई व्यवस्था को व्यवस्थित किया. इस काल में अनाज इतना उत्पन्न होता था कि वह न केवल यहाँ की जनता की आव-श्यकता की पूर्ति करता था, बल्कि देश के बाहर भी निर्यात किया जाता था.

गन्ना, कपास, अफीम, तिलहन, दलहन आदि का उत्पादन भी मुख्य रूप से किया जाता था. देश के विभिन्न भाग भिन्न-भिन्न फलों की पैदावार के लिए ख्याति प्राप्त थे. फिरोज तुगलक ने अनेक बाग लगवाए, इसीलिए उसकी आय का एक बड़ा भाग फलों से आता था. देश की अधिकांश जनता कृषि कार्य में संलग्न थी, लेकिन फिर भी शहरों एवं गाँवों में अनेक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक उद्योग विद्यमान थे. मछली-पालन, धातुकर्म, नमक उत्पादन, अफीम, शोरा, शराब उत्पादन आदि प्रमुख उद्योग थे, जो ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में विद्यमान थे. इन उद्योगों का राज्य की अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता था. खनिजों में सोना, चाँदी, लोहा और ताँबा प्रमुख थे. गाँवों एवं नगरों में व्यापार व्यापारिक संघों के माध्यम से होता था. ये व्यापारिक संघ बड़े पैमाने पर व्यापार करते थे. सल्तनत काल में इन व्यापारिक संघों को राजकीय संरक्षण प्राप्त न था फिर भी इन्होंने शत्रुओं के आक्रमणों की मार झेलते हुए अपना अस्तित्व बनाए रखा.

देश में दो प्रकार के उद्योग विद्यमान थे—एक तो वे जिन्हें राज्य का संरक्षण प्राप्त था, दूसरे वे जो पूर्णरूपेण निजी स्वामित्व में थे. इनके अतिरिक्त दिल्ली के सुल्तानों के अपने निजी कारखाने थे जिनमें शाही जरूरत की चीजें पूरी की जाती थीं.

सुल्तानों के निजी कारखानों में सिल्क व अन्य प्रकार के वस्त्रों के बनाने वाले अनेक मजदूर काम करते थे. प्रतिवर्ष खिलअतें तैयार करने के लिए हजारों गज सिल्क और सूती कपड़ा तैयार किया जाता था. कीमती आभूषण एवं सजावटी सामान बनाने के लिए भी पृथक् शाही कारखाने थे. व्यापारियों के निजी उद्योगों में प्रसिद्ध थे—सूती कपड़ा, सूत बनाना, ऊनी और रेशमी वस्त्र उद्योग, धातुकर्म, कागज उद्योग आदि. वैसे तो देश के सभी भागों में सूती कपड़ा बनाया जाता था, लेकिन बंगाल और गुजरात सूती वस्त्रों के निर्माण और निर्यात के लिए प्रसिद्ध थे

सल्तनत काल में प्रजा की आर्थिक दशा सुधारने के लिए कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था. भारतीय व्यापारी देश-विदेश से भारी मात्रा में व्यापार करते थे, कृषि उत्पाद, सूती-रेशमी कपड़े, जर्मन सिल्वर, अफीम, नील आदि निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ

Scanned with CamScanner

थीं. घोड़े और विलास सामग्री विदेशों से आयातित होती थीं. आयात की तुलना में निर्यात अधिक होता था. अतः व्यापारिक सन्तुलन भारत के पक्ष में ही रहता था. सल्तनत काल में चीन, मलाया द्वीप समूहों और प्रशान्त महासागर के अन्य देशों से हमारे व्यापारिक सम्बन्ध थे. व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था.

तत्कालीन भारत में धन का असमान वितरण था. धन कुछेक लोगों के हाथ में ही केन्द्रित था. सुल्तान, सल्तनत के मंत्री एवं पदाधिकारी, हिन्दू, राजा, जागीरदार, बड़े व्यापारी, साहूकार आदि धनिकों की गिनती में आते थे. ये लोग बड़े-बड़े आलीशनों घरों एवं महलों में रहते थे और सदैव भोग-विलास में डूबे रहते थे. दूसरा वर्ग मध्यम वर्ग था जिसमें नौकर-पेशा लोग, साधारण व्यापारी आते थे. इस वर्ग के लोग खाते-पीते और सम्पन्न थे, लेकिन अधिकांश जनता निर्धन वर्ग में आती थी, जो अपनी आव-श्यकताएँ तक पूरी नहीं कर पाती थीं. इस वर्ग में मुख्यतः किसान वर्ग आता था जिसकी उपज का 2/3 भाग कर अदायगी में चला जाता था. वह सदैव कर्ज में डूबा रहता था. इस वर्ग की आवश्यकताएँ काफी कम थीं. साधारण परिस्थितियों में किसान भूखा नहीं मरता था, लेकिन अकाल के समय उनकी स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो जाती थी.

हालांकि वस्तुओं के मूल्य सभी जगह समान नहीं थे फिर भी सामान्यतः वस्तुएँ सस्ती रहती थीं, लेकिन विपरीत परिस्थितियों में—जैसे अकाल में दाम असाधारण रूप से बढ़ जाते थे. युद्धकाल में भी कीमतें बढ़ जाती थीं. सिकन्दर लोदी और इब्राहीम लोदी के शासनकाल में वस्तुएँ असाधारण रूप से सस्ती थीं. इब्राहीम लोदी के समय में एक बहलोली में 10 मन अनाज, 5 सेर तेल और दस गज मोटा कपड़ा खरीदा जा सकता था. बहलोली का मूल्य जीतल का छठा भाग था.

Scanned with CamScanner